

व्यक्तित्व (Personality)

अर्थ -

‘व्यक्तित्व’ अंग्रेजी के पर्सनेल्टी (Personality) का पर्याय है। पर्सनेल्टी शब्द की उत्पत्ति यूनानी भाषा के ‘पर्सोना’ शब्द से हुई है, जिसका अर्थ है ‘मुखोटा (Mask)’। उस समय व्यक्तित्व का तात्पर्य बाह्य गुणों से लगाया जाता था। यह धारणा व्यक्तित्व के पूर्ण अर्थ की व्याख्या नहीं करती। व्यक्तित्व की कुछ आधुनिक परिभाषाएँ दृष्टव्य है :

परिभाषाएँ-

1. गिलफोर्ड के अनुसार: व्यक्तित्व गुणों का समन्वित रूप है।

2. वुडवर्थ के अनुसार : व्यक्तित्व के व्यवहार की एक समग्र विशेषता ही व्यक्तित्व है।

3. मार्टन के अनुसार : व्यक्तित्व व्यक्ति के जन्मजात तथा अर्जित स्वभाव, मूल प्रवृत्तियों, भावनाओं तथा इच्छाओं आदि का समुदाय है।

4. बिग एवं हंट के अनुसार: व्यक्तित्व व्यवहार प्रवृत्तियों का एक समग्र रूप है, जो व्यक्तित्व के सामाजिक समायोजन में अभिव्यक्त होता है।

5- Myj dsvuqkj t hou y{; l fgr t hou dh l eL; k/kdsi fr i fr fO; k djusds
for KV < v fkok t hou 'kshdksOfDr Ro dgrsg

6. ऑलपोर्ट (1937) के अनुसार, “व्यक्तित्व व्यक्ति के भीतर उन मनोशारीरिक तन्त्रों का गतिशील या गत्यात्मक संगठन है जो वातावरण में उसके अपूर्व समायोजन को निर्धारित करते हैं।” ऑलपोर्ट की इस परिभाषा में व्यक्तित्व के भीतरी गुणों तथा बाहरी गुणों को यानी व्यवहार को सम्मिलित किया गया है। परन्तु ऑलपोर्ट ने भीतरी गुणों पर अधिक बल दिया है। व्यक्तित्व को इस रूप में विश्लेषित किया जा सकता है-

1. **मनोशारीरिक तन्त्र** - व्यक्तित्व एक ऐसा तन्त्र है जिसके मानसिक तथा शारीरिक दोनों ही पक्ष होते हैं। यह तन्त्र ऐसे तत्वों का एक गठन होता है जो आपस में अन्तः क्रिया करते हैं। इस तन्त्र के मुख्य तत्व शीलगुण, संवेग, आदत, ज्ञानशक्ति, चित्तप्रकृति, चरित्र, अभिप्रेरक आदि हैं जो सभी मानसिक गुण हैं परन्तु इन सब का आधार शारीरिक अर्थात् व्यक्ति के ग्रन्थीय प्रक्रियाएँ एवं तंत्रिकीय प्रक्रियाएँ हैं।
2. **गत्यात्मक संगठन**- गत्यात्मक संगठन से तात्पर्य यह होता है कि मनोशारीरिक तन्त्र के भिन्न-भिन्न तत्व जैसे शीलगुण, आदत आदि एक-दूसरे से इस तरह संबंधित होकर संगठित हैं कि उन्हें एक-दूसरे से पूर्णतः अलग नहीं किया जा सकता है। इस संगठन में परिवर्तन सम्भव है।
3. **संगतता**- व्यक्तित्व में व्यक्ति का व्यवहार एक समय से दूसरे समय में संगत होता है। संगतता का तात्पर्य यह है कि व्यक्ति का व्यवहार दो भिन्न अवसरों पर भी लगभग एक समान होता है। व्यक्ति के व्यवहार में इसी संगतता के आधार पर उसमें अमुक शीलगुण होने का अनुमान लगाया जाता है।

4. **वातावरण में अपूर्व समायोजन का निर्धारण-** प्रत्येक व्यक्ति में मनोशारीरिक गुणों का एक ऐसा गत्यात्मक संगठन पाया जाता है कि उसका व्यवहार वातावरण में अपने-अपने ढंग का अपूर्व होता है। वातावरण समान होने पर भी प्रत्येक व्यक्ति का व्यवहार, विचार, होने वाला संवेग आदि अपूर्व होता है। जिसके कारण उस वातावरण के साथ समायोजन करने का ढंग भी प्रत्येक व्यक्ति में अलग-अलग होता है।

अर्थात् यह कहा जा सकता है कि व्यक्तित्व में भिन्न-भिन्न शीलगुणों का एक ऐसा गत्यात्मक संगठन होता है जिसके कारण व्यक्ति का व्यवहार तथा विचार किसी भी वातावरण में अपने ढंग का अर्थात् अपूर्व होता है।

इस प्रकार हम निष्कर्ष रूप में कह सकते हैं, कि व्यक्तित्व एक व्यक्ति के समस्त मानसिक एवं शारीरिक गुणों का ऐसा गतिशील संगठन है, जो वातावरण के साथ उस व्यक्ति का समायोजन निर्धारित करता है।

व्यक्तित्व की विशेषताएं-

व्यक्तित्व की निम्नलिखित विशेषताएं पाई जाती हैं।

1. **सामंजस्यता (Adaptability)-** सामंजस्यता या अनुकूलन का गुण अच्छे व्यक्तित्व की पहली पहचान है। मनुष्य और उसके चारों ओर का वातावरण परिवर्तनशील है। वातावरण के विभिन्न घटकों में आने वाला परिवर्तन मनुष्य को प्रभावित करता है; अतः सन्तुलित व्यक्तित्व में अपने वातावरण के साथ अनुकूलन करने या सामंजस्य स्थापित करने की क्षमता होनी चाहिए। सामंजस्य की इस प्रक्रिया में या तो व्यक्ति स्वयं को वातावरण के अनुकूल परिवर्तित कर लेता है या वातावरण में अपने अनुसार परिवर्तन उत्पन्न कर देता है।
2. **समायोजन की योग्यता (Adjustability)-** व्यक्ति अपने आपको परिवेश के अनुरूप ढालने का प्रयास करता है, जिससे वह समाज के परिवेश के साथ समायोजन स्थापित कर सके। यहां समायोजन मतलब यह है कि – अपने आपको परिवेश के मतानुसार ढालना और परिवेश को अपने अनुकूल बनाना।
3. **आत्म चेतना (Self Consciousness)-** आत्म चेतना से यह आशय है कि व्यक्ति आत्मचिंतन के जरिए इस बात का ध्यान रखता है कि समाज में उसकी क्या छवि बन रही है, और समाज के लोग उसके प्रति कैसी भावना रखते हैं। एक व्यक्ति इस बात का चिंतन जरूर करता है कि उसके द्वारा किए जा रहे कार्यकलापों से लोग उसके प्रति कैसे धारणा बनाएंगे जो इस बात से हमेशा सजग रहता है कि लोगों की नजरों में उसकी क्या छवि है। आत्म-चिंतन की दृष्टि से एक छोटा बालक, एक पशु के समान ही है, जिसमें आत्म चेतना का अभाव रहता है।
4. **निरंतरता (Continuity)-** विकास एक जीवन पर्यंत चलने वाली प्रक्रिया है। एक अच्छे व्यक्तित्व के लिए हमेशा ही उसके विकास की प्रक्रिया उत्तम होनी चाहिए। **मनोवैज्ञानिक गैरीसन, किंगस्टन और**

मैकडॉनल्ड ने अनवरत विकास के संबंध में कहा है कि "व्यक्तित्व अनवरत विकास की प्रक्रिया में रहता है।

5. **सन्तोषपूर्ण महत्त्वाकांक्षा (Satisfactory Ambition)**- उच्च एवं महत् आकांक्षाएँ मानव-जीवन के विकास की द्योतक हैं, किन्तु यदि व्यक्ति इन उच्च आकांक्षाओं के लिए चिन्तित रहेगा तो उससे वह स्वयं को दुःखी एवं असन्तुष्ट हो पाएगा। मनुष्य को अपनी मनःस्थिति को इस प्रकार निर्मित करना चाहिए कि इन उच्च आकांक्षाओं की पूर्ति के अभाव में उसे असन्तोष या दुःख का बोध न हो। मनोविज्ञान की भाषा में इसे सन्तोषपूर्ण महत्त्वाकांक्षा कहा गया है और यह सुन्दर व्यक्तित्व के लिए आवश्यक है।
6. **लक्ष्य निर्देशित (Goal Directedness)**- प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में कोई न कोई लक्ष्य जरूर होता है, जिसको ध्यान में रखकर व्यक्ति उस लक्ष्य प्राप्ति के लिए हमेशा प्रयत्नशील लेता है। क्योंकि व्यक्ति अपने लक्ष्य के अनुरूप ही कार्य करता है, इसलिए व्यक्ति के व्यक्तित्व में उसके लक्ष्य का काफी प्रभाव पड़ता है।
7. **सामाजिकता (Sociability)**- सामाजिकता व्यक्ति के व्यक्तित्व की एक प्रमुख विशेषता है मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और वह समाज के बीच ही रहता है। व्यक्ति समाज के बीच की रहकर अपने सारे क्रिया-कलाप करता है।
8. **दृढ़ इच्छाशक्ति (strong will power)**- प्रबल एवं दृढ़ इच्छा शक्ति के कारण कार्य में तन्मयता तथा संलग्नता आती है। प्रबल संकल्प लेकर ही बाधाओं पर विजय प्राप्त की जा सकती है तथा लक्ष्य प्राप्त किया जा सकता है। स्पष्टतः संकल्प-शक्ति की प्रबलता सन्तुलित व्यक्तित्व का एक उचित मानदण्ड है।
9. **एकीकरण (Integration)**- मनुष्य में समाहित उसके समस्त गुण एकीकृत या संगठित स्वरूप में उपस्थित होने चाहिए। सन्तुलित व्यक्तित्व के लिए उन सभी गुणों का एक इकाई के रूप में समन्वय अनिवार्य है। किसी एक गुण या पक्ष का आधिक्य या वेग व्यक्तित्व को असंगठित बना देता है। ऐसा बिखरा हुआ व्यक्तित्व असन्तुष्ट व दुःखी जीवन की ओर संकेत करता है। अतः अच्छे व्यक्तित्व में एकीकरण या संगठन का गुण पाया जाता है।
10. **मनोदैहिक (Psychomatic)**- एक अच्छे व्यक्तित्व के लिए यह आवश्यक है कि व्यक्ति का, शारीरिक स्वास्थ्य और मानसिक स्वास्थ्य दोनों ही अच्छे हों। एक व्यक्ति का मानसिक स्वास्थ्य भी अच्छा होगा जब उसका शारीरिक स्वास्थ्य भी अच्छा हो। क्योंकि मनुष्य एक मानोदैहिक जीव है।

व्यक्तित्व को प्रभावित करने वाले कारक-

1. **वंशानुक्रम का प्रभाव** : व्यक्तित्व के विकास पर वंशानुक्रम का प्रभाव सर्वाधिक और अनिवार्यतः पड़ता है। **स्किनर व हैरिमैन** का मत है कि- "मनुष्य का व्यक्तित्व स्वाभाविक विकास का परिणाम नहीं है। उसे

अपने माता-पिता से कुछ निश्चित शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक और व्यावसायिक शक्तियाँ प्राप्त होती हैं।”

2. सामाजिक वातावरण का प्रभाव : बालक जन्म के समय मानव-पशु होता है। उसमें सामाजिक वातावरण के सम्पर्क से परिवर्तन होता है। वह भाषा, रहन-सहन का ढंग, खान-पान का तरीका, व्यवहार, धार्मिक व नैतिक विचार आदि समाज से प्राप्त करता है। समाज उसके व्यक्तित्व का निर्माण करता है। अतः बालकों को आदर्श नागरिक बनाने का उत्तरदायित्व समाज का होता है।

3. परिवार का प्रभाव : व्यक्तित्व के निर्माण का कार्य परिवार में आरम्भ होता है, जो समाज द्वारा पूरा किया जाता है। परिवार में प्रेम, सुरक्षा और स्वतंत्रता के वातावरण से बालक में साहस, स्वतंत्रता और आत्मनिर्भरता आदि गुणों का विकास होता है। कठोर व्यवहार से वह कायर और असत्यभाषी बन जाता है।

4. सांस्कृतिक वातावरण का प्रभाव : समाज व्यक्ति का निर्माण करता है, तो संस्कृति उसके स्वरूप को निश्चित करती है। मनुष्य जिस संस्कृति में जन्म लेता है, उसी के अनुरूप उसका व्यक्तित्व होता है।

5. विद्यालय का प्रभाव : पाठ्यक्रम, अनुशासन, खेलकूद, शिक्षक का व्यवहार, सहपाठी आदि का प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष प्रभाव व्यक्तित्व के विकास पर पड़ता है। विद्यालय में प्रतिकूल वातावरण मिलने पर बालक कुंठित और विकृत हो जाता है।

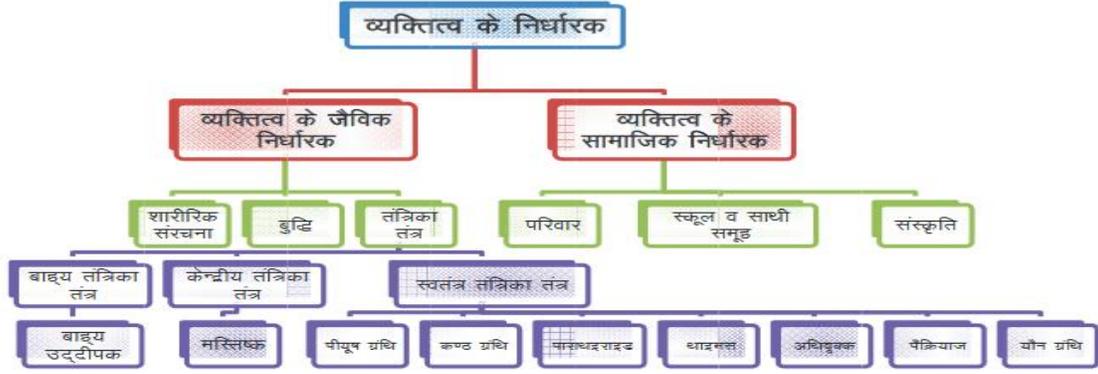
6. संवेगात्मक विकास : अनुकूल वातावरण में रहकर बालक संवेगों पर नियंत्रण रखना सीखता है। संवेगात्मक असंतुलन की स्थिति में बालक का व्यक्तित्व कुंठित हो जाता है। इसलिए वांछित व्यक्तित्व के लिए संवेगात्मक स्थिरता को पहली प्राथमिकता दी जाती है।

7. मानसिक योग्यता व रूचि का प्रभाव : व्यक्ति की जिस क्षेत्र में रूचि होती है, वह उसी में सफलता पा सकता है और सफलता के अनुपात में ही व्यक्तित्व का विकास होता है। अधिक मानसिक योग्यता वाला बालक सहज ही अपने व्यवहारों को समाज के आदर्शों के अनुकूल बना देता है।

8. शारीरिक प्रभाव : अन्तः स्त्रावी ग्रंथियाँ, नलिका विहीन ग्रंथियाँ, शारीरिक रसायन, शारीरिक रचना आदि व्यक्तित्व को प्रभावित करते हैं। शरीर की दैहिक दशा, मस्तिष्क के कार्य पर प्रभाव डालने के कारण व्यक्ति के व्यवहार और व्यक्तित्व को प्रभावित करती है। इनके अलावा बालक की मित्र-मण्डली और पड़ोस भी उसके व्यक्तित्व को प्रभावित करते हैं।

व्यक्तित्व विकास के आयाम-

व्यक्तित्व का विकास जिन जिन दशाओं में होता है उसे व्यक्तित्व का आयाम कहते हैं।



1. **शारीरिक आयाम**- शारीरिक विकास हर व्यक्ति मे अलग-अलग मात्रा मे होता है जो शारीरिक ग्रन्थियों पर निर्भर करता है ।
2. **मानसिक आयाम**-वंशानुक्रम से जो योग्यताएँ प्राप्त होती है उसका मानसिक विकास पर अलग ही प्रभाव दिखाई देता है।
3. **सामाजिक आयाम**-सामाजिकता के आधार पर ही व्यक्ति में दयालुता, सहिष्णुता, निर्देयता, कोमलता, कठोरता आदि गुणों का विकास होता है।
4. **संवेगात्मक आयाम**-सभी व्यक्तियों मे अनेको प्रकार के संवेग होते है लेकिन उन सब की तीव्रता अलग-अलग होती है।